UGC Approved, Journal No. 49321
Impact Factor : 2.591

ISSN : 0976-6650

शोध दृष्टि

Shodh Drishti

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 9, No. 4

February, 2018

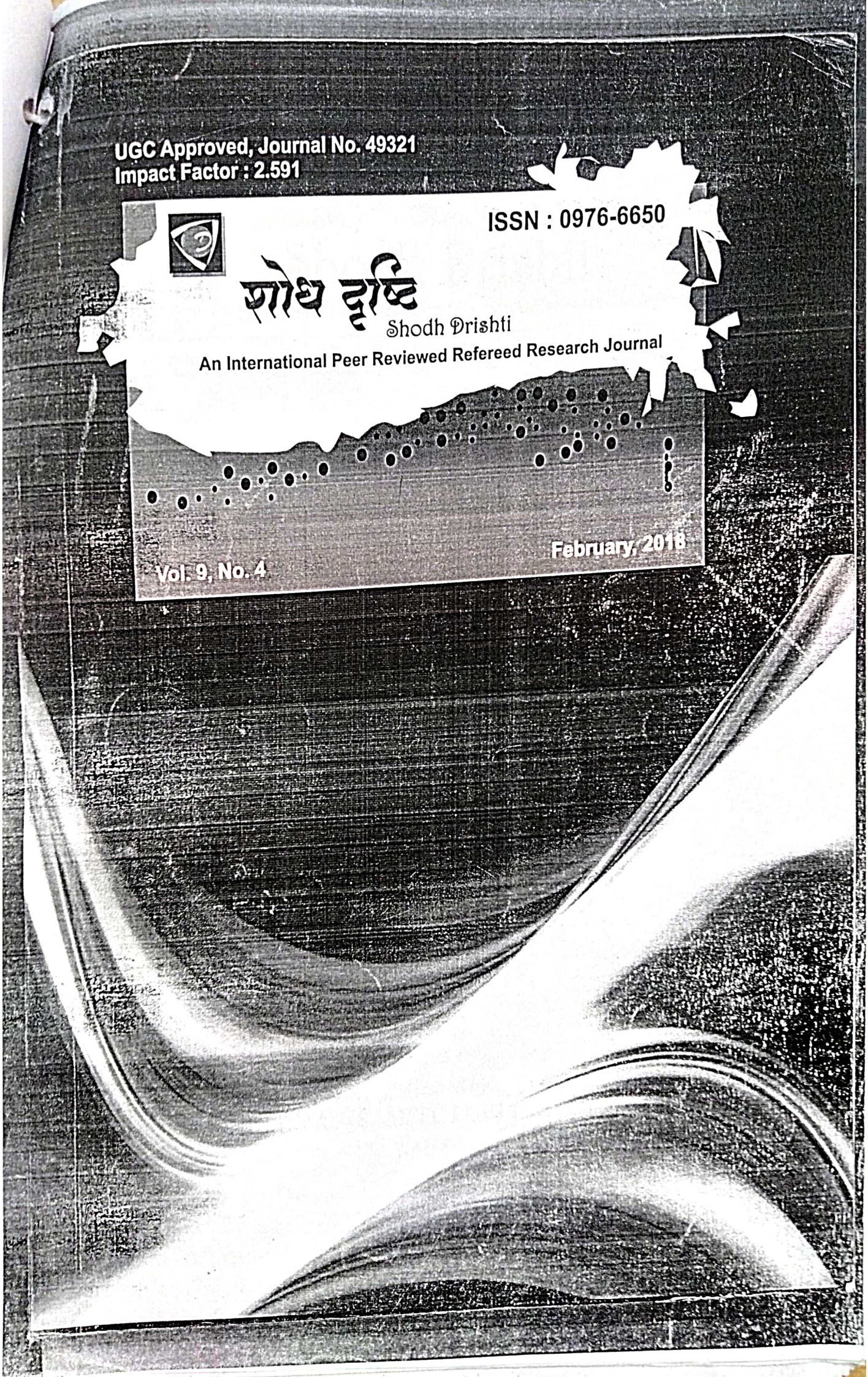

UGC Approved Journal No. 49321
Shodh Drishti (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal), Vol. 9, No. 4, February, 2018 Impact Factor : 2.591
ISSN : 0976-6650

प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों हेतु पर्यावरण-सम्बन्धी विषयवस्तु एवं शिक्षण-अधिगम-सामग्री का निर्धारण

डॉ० सन्तु मिश्रा
प्रवक्ता, बी०एड० विभाग, डी०बी०एस० महाविद्यालय, कानपुर

पर्यावरण शिक्षा वर्तमान समय की आवश्यकता है। शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर विशेष रूप से प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता को स्वीकार कर लिया गया है। प्राथमिक स्तर आदत निर्माण का समय है। इस समय निर्मित आदतें व्यक्ति के व्यक्तित्व का अभिन्न भाग बन जाती हैं। बालक का आरम्भिक ज्ञान पूरी तरह से उसके परिवेश से जुड़ा होता है। पर्यावरण अध्ययन एक ऐसा विषय है जिसका सम्बन्ध बालक के परिवेश से है। अतः औपचारिक पर्यावरण शिक्षा को बालक के परिवेश से जोड़ा जाना चाहिये। यह तथ्य ग्रामीण और शहरी दोनों ही प्रकार के विद्यार्थियों के लिये उपयुक्त है। अतः प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण और शहरी दोनों ही प्रकार के विद्यार्थियों के लिये पर्यावरण शिक्षा की विषयवस्तु का अलग–अलग निर्धारण महत्वपूर्ण है। यहाँ एक यह प्रश्न भी महत्वपूर्ण है कि पर्यावरण आधारित विषयवस्तु विद्यार्थियों के समक्ष किस प्रकार प्रस्तुत की जाये? अध्ययनों से पता चला कि कई शोधकर्ताओं ने शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर पर्यावरण शिक्षा हेतु विभिन्न विषयों के लिये शिक्षण–अधिगम–सामग्री और विभिन्न अनुदेशन कार्यक्रमों का प्रयोग किया जाना प्रभावी पाया। नटराजन और नटेसन (2004) के अध्ययन से पता चला कि कक्षा–पाँच के विद्यार्थियों के लिये वीडियो–कैसेट द्वारा किया गया क्षमता–आधारित पर्यावरण–विज्ञान शिक्षण प्रभावी है। पाण्डा और इन्दिरा (2004) के अध्ययन के निष्कर्षों से पता चला कि क्रिया–आधारित आनन्दपूर्ण अधिगम उपागम पर्यावरण अध्ययन के शिक्षण में अतःअनुशासनात्मक अधिगम क्षमता के न्यूनतम स्तर की प्राप्ति हेतु एक उपयुक्त नीति है। रामकुमार (2004) ने भी कक्षा–चार के विद्यार्थियों के लिये पर्यावरण अध्ययन हेतु अनुदेशन कार्यक्रम का निर्माण किया और उसे प्रभावी पाया। वर्मा (2004) ने जूनियर हाईस्कूल के छात्रों में पर्यावरण–सम्बन्धी ज्ञान एवं जागरूकता के विकास के लिये शिक्षण कार्यक्रम का निर्माण करके उसे प्रभावी पाया। इन्नामुल (2010) के अध्ययन के अनुसार कार्टून–विश्लेषण का प्रयोग पर्यावरण शिक्षा में किया जा सकता है। नेहरा और कौर (2010) ने पर्यावरणीय जागरूकता के विकास में अनुभवात्मक अधिगम नीति को परम्परागत अधिगम विधि की तुलना में अधिक प्रभावी पाया। नेहरा और कौर (2012) के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि कक्षा–पाँच के विद्यार्थियों के उत्तरदायी पर्यावरणीय व्यवहार को बढ़ाने में आउटडोर पर्यावरण–शिक्षा कार्यक्रम प्रभावी है। डिमापोलस, परासकेवोपोलस और पैन्टीस (2009) और जैनी (2011) ने पर्यावरण आधारित मॉड्यूल्स का निर्माण करके उन्हें प्रभावी पाया। इन अध्ययनों से इंगित हुआ कि पर्यावरण शिक्षा को प्रभावी बनाने के लिये उपयुक्त विषयवस्तु के साथ–साथ उपयुक्त शिक्षण कार्यक्रम एवन् अधिगम–सामग्री आवश्यक है। यहाँ यह तथ्य भी ध्यान देने के योग्य है कि पर्यावरण शिक्षा हेतु विषयवस्तु के साथ–साथ शिक्षण–अधिगम–सामग्री के निर्धारण में भी विद्यार्थियों के शहरी और ग्रामीण परिवेश को ध्यान में रखा जाना चाहिये। पर्यावरण शिक्षा के सन्दर्भ में स्थानीयता का यह अन्तर महत्वपूर्ण है। अतः यह अपरिहार्य है कि वर्तमान ग्रामीण भारतीय परिवेश में विद्यार्थियों को दी जाने वाली पर्यावरण शिक्षा की विषयवस्तु के साथ–साथ शिक्षण–अधिगम–सामग्री का स्वरूप भी सुनिर्धारित हो और पढ़ाई जाने वाली विषयवस्तु, दिये जाने वाले उदाहरण और प्रयुक्त शिक्षण–अधिगम–सामग्री उनके अपने परिवेश से जुड़े हों। ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों को ध्यान में रखते हुए पर्यावरण सम्बन्धी विषयवस्तु और शिक्षण–अधिगम–सामग्री का अलग से निर्धारण होना चाहिये, तभी पर्यावरण शिक्षा दिये जाने के उद्देश्य की प्राप्ति हो सकेगी और सम्पूर्ण भारतीय परिवेश में पर्यावरण शिक्षा प्रभावी सिद्ध हो पायेगी।

अध्ययन की आवश्यकता

प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण सम्बन्धी ज्ञान, कौशल और अभिवृत्ति का विकास किया जाना अपरिहार्य है किन्तु यह तथ्य भी महत्वपूर्ण है कि विद्यार्थियों को दी जाने वाली पर्यावरण शिक्षा का सम्बन्ध उनके आस–पास के परिवेश से न होने के कारण वे न तो पर्यावरण सम्बन्धी सम्प्रत्ययों के अर्थ भलीभाँति समझ पाते हैं और न ही पर्यावरण सम्बन्धी कौशल और अभिवृत्ति का विकास ही हो पाता है। शोधकर्त्री को विभिन्न शिक्षा संस्थाओं द्वारा संचालित पाठ्यक्रमों का अध्ययन करते समय ज्ञात हुआ कि बेसिक शिक्षा परिषद, उ0प्र0 द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम में पर्यावरण अध्ययन को एक पृथक विषय के रूप में सम्मिलित नहीं किया गया है।